International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, Feb 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मुंशी प्रेमचंद की कहानियों में दलित संवेदना

सन्दीप कुमार
शोधार्थी
हिन्दी विभाग
YBN University,
Ranchi (Jharkhand)

भूमिका

मुंशी प्रेमचंद को कलम का जादूगर एवं कलम का मजदूर आदि उपाधियों से नवाजा गया है। प्रेमचंद जी ने तीन सौ से भी अधिक रचना की है। जिनमें ईदगाह, अग्नि–समाधि, अनाथ लड़की, अभिलाषा, अमावस्या की रात्रि, इज्जत का खून, कफन आदि उनकी प्रमुख रचना है। मुंशी प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 में वाराणसी के लमही गाँव में हुआ था उनका असली नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। मुशी प्रेमचंद जी की शिक्षा का आरंभ उर्दू एवं फारसी से हुआ था। 1898 में मैट्रिक की परीक्षा पास करने के बाद वह एक स्थानिक पाठशाला में अध्यापक के पद पर नियुक्त हुए। 1910 में उन्होंने इंटर और 1919 में बी0 ए0 पास करने के बाद स्कूलों के डिप्टी सब–इंस्पेक्टर नियुक्त हुए। उन्होंने समाज के हर शोषित वर्ग की समस्याओं को अपनी रचना में स्थान दिया। उन्होंने गरीब किसानों, मजदूरों, दलितों एवं स्त्रियों के उत्पीड़न की अभिव्यक्ति प्रदान की। प्रेमचंद्र जी ने अपनी कहानियों में दलित समझे जाने वाले वर्ग की दयनीय स्थिति का सजीव चित्रण किया है।

जातिगत मत–भेद की उत्पति

हमारे वेदों एवं पुराणों में जाति व वर्ण के आधार पर भेदभाव के साक्ष्य मिलते है। कहीं पर इसका आरम्भ ब्रह्म के विभिन्न अंगों से उत्पन्न माना जाता है तो कहीं पर इसको मानव के व्यवसाय के आधार पर जाति का निर्माण माना गया है। प्राचीन समय में जाति भेद का कारण कुछ भी रहा हो लेकिन वर्तमान समय में जाति का आधार जन्म के आधार पर किया जाता है। अगर कोई मनुष्य स्वर्ण जाति में उत्पन्न होता है तो उसे पवित्र माना जाता है और इसके विपरित निम्न जाति में पैदा होने वाले मानव को अछूत व दलित समझा जाता है। यह हमारे देश की एक बहुत ही गम्भीर समस्या है एक तरफ तो सम्पूर्ण सृष्टि का रचनाकार ब्रह्म को माना जाता है। वही दूसरी तरफ उसे धर्म एवं

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, Feb 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories
Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जाति के आधाार पर बांट दिया गया हैं। मुंशी प्रेमचन्द ने दलितों के प्रति समाज के इस निकृष्ट दृष्टिकोण को अपनी कहानियों के माध्यम से चित्रित किया है।

दलित एवं स्त्रियों का शोषण

समाज को आज भी पुरुष प्रधान माना गया है। पुरुष धन कमाकार लाता है व स्त्री उस धन से भोजन बनाकर अपने परिवार का पालन–पोषण करती है लेकिन अब धीरे–धीरे इस सामाजिक व्यवस्था में बदलाव आ रहा है। स्त्री भी अब प्रकार के व्यवसाय में बढ़–चढ़कर भाग ले रही है। परन्तु हमारे समाज जाति भेद का जहर आज भी विद्यमान है दलित एवं अछूत माने जाने वाले पुरुषों को आर्थिक रूप से निम्न वर्ग पर निर्भर रहना पड़ता है उन्हें धर्म व जाति के भेदभाव के पेंच में इस प्रकार फसाकर रखा गया कि वे अपनी वर्तमान स्थिति से ऊपर उठने की कल्पना भी ना कर सके। प्रेमचंद ने दलितों के प्रति समाज के इस दयनीय दृष्टिकोण को अपनी कहानियों के माध्यम से चित्रित किया है।[1] 'सद्गति' कहानी का अछुत पात्र दुखी अपनी बेटी की सगाई के शुभ अवसर के लिए पंडित घासीराम को बुलाने के लिए जाता है। पंडित उसके साथ जाने के बदले उससे झाडू लगाने, गोबर लेपने, भूसा लाने व लकड़ी काटने के लिए कहता है। वह बेचार दिनभर अपने भूखे–पेट से सभी काम निपटाने की कोशिश करता है। जब वह थक्कर चूर हो जाता है तो वह चिल्लम जलाने के लिए आग मांडने पंडित के द्वार पर चला जाता है। पंडित के घर वाली को अछूत के द्वारा घर अुशुद्ध किए जाने पर पंडित को खरी–खोटी सुनाते हुए कहती है, तुम्हें तो जैसे पोथी–पत्रों के फेर में धर्म–करम किसी बात की सुधि ही नही रही। चमार हो, धोबी हो, पासी हो मुँह उठाये घर में चला आये।

हिन्दू का घर ना हुआ, कोई सराये हुई। वह बेचारा ये सब बातें सुनकर स्वयं ही अपने आप को दुत्कारने लगता है, मानों उससे कोई घोर अपराध हो गया हो। वह विनम्र होकर पंडिताइन से कहता है – "पंडिताइन याता मुझससे बड़ी भूल हुई कि घर में चला आया। चमार की अक्ल ही तो ठहरी। इतने मूरख ना होते, तो लात क्यों खाते।"[2] कहानी के अंत में वह बेचारा लकड़ी काटते–काटते मर जाता है। इससे साफ प्रदर्शित होता है कि पिछड़े वे अछूत वर्ग को कितनी अमानवीयता व निर्दयता से प्रताड़ित किया गया। उनके अंदर स्वाभिमान के भाव की अपेक्षा दीनता का भाव भर दिया गया। दलितों को सार्वजनिक कुंए से पानी पीने जाने एवं मंदिर में प्रवेश की अनुमति नही थी। उनकी इस उपेक्षित स्थिति की एक झलक हमें मुंशी प्रेमचन्द जी की कहानी 'ठाकुर का कुआँ' में दिखाई देती है। इस कहानी में बीमार जोखू प्यास लगने पर भी सड़ा व गंदा पानी पीने के लिए मजबूर है क्योंकि दलितों के कुएं में कोई जानवर मर गया था जिससे कुएं का

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, Feb 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories
Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पानी सड़ रहा था बाकि के दो कुओं में एक ठाकुर का है और एक साहू का है। जब उसकी पत्नी उसे गंदा पानी पीने से मना करता है और कहती है कि वह उसके लिए ठाकुर के कुएँ से पानी भर ले आएगी। तब जोखू उसे मना करते हुए कहता है, "हाथ–पाँव तुड़वा आयेगी और कुछ न होगा। बैठ चुपके से। ब्राहण–देवता आशीर्वाद देगे, ठाकुर लाठी मारेंगे, साहूजी एक के पाँच लेंगे। गरीबों का दर्द कौन समझता है। हम तो मर भी जाते है, तो कोई हमारे दरवाजे पर झाँकने नही आता, कंधा देना तो बड़ी बात है। ऐसे लोग कुएँ से पानी भरने देगे?[3] जीवन की मूल–भूत आवश्यकता के साथ–साथ उन्हें भगवान के मंदिर में जाने से भी वंचित रखा गया प्रेमचन्द की कहानियों से पता चलता है कि दलितों को सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक स्तरपर उनके साथ इनका शोषण किया गया कि उन्होंने इस अत्याचार को सहन करना अपनी नियति मान लिया। उनकी संपूर्ण जिदंगी साहूकारों का कर्ज चुकाते–चुकाते बीत जाती है पर उनका कर्ज नहीं खत्म होता। उनकी मृत्यु के बाद उनका कर्ज उनकी आने वाली पीढ़ियाँ चुकाती हैं। इस प्रकार यह परंपरा चलती रहती है। इस प्रताड़ना व अत्याचार को सहन करते–करते उनके मन में कर्म व खुशहाल जीवन के प्रति विरक्ति उत्पन्न हो जाती है। जिसका वर्णन मुंशी प्रेमचन्द ने 'कफन' कहानी में किया गया है। यह कहानी आलोचना की दृष्टि से बहुत ही चर्चित रही है। इस कहानी के आधार पर प्रेमच्रद पर आरोप लगाया जाता है, कि वे दलितों के सच्चे समर्थक नहीं हैं। इस कहानी में घीसू और माधव गरीब व कमजोर पिता–पुत्र है, जिनका चरित्र पूरे गाँव में खराब हैं। वे दोनों खाते रहते हैं और माधव की पत्नी प्रसव पीड़ा के कारण मर जाती है। इसके कफन के लिए इकट्ठे किए गये पैसों से वे भरपेट भोजन करतें है। माधव व घीसू ने भरपेट स्वादिष्ट भोजन नहीं किया है, लेकिन घीसू ने बीस साल पहले एक बार किसी बारात में भरपेट खाना खाया था। इसलिए मुंशी प्रेमचंद जी ने घीसू और माधव के विषय में कहा है कि "जिस समाज में रात–दिन मेहनत करने वालों की आलत उनकी हालत से कुछ बहुत अच्छी न भी और किसानों के मुकाबले में वे लोग, जो किसानों की दुर्बलताओं से लाभ उठाना जानते थे, कहीं ज्यादा सम्पन्न थे, वहाँ इस तरह की मनोवृत्ति का पैदा हो जाना कोई अचरज की बात न थी।"[4]

हमारे समाज में नारी होना भी एक अभिशाप के समान है। दलित नारी को नारी होने के साथ–साथ दलित व गरीबी एवं अनेक तरह के अत्याचार और शोषण को सहन करना पड़ता है। प्रेमचंद ने दलित स्त्री की दयनीय व करूणापूर्ण स्थिति का मार्मिक चित्रण अपनी कहानियों के माध्यम से किया है। 'मंदिर' कहानी में अछूत सुखिया अपने पुत्र की मंगलकामना के लिए मंदिर में प्रवेश की हरसंभव कोशिश करती है। लोगों द्वारा

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, Feb 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मारे जाने पर जब उसके बीमार पुत्र की मृत्यु हो जाती है। तब वह अपनी ममतामयी माँ एवं क्रोध से भरकर भीषण भीड़ को दुत्कारते हुए कहती है– "पापियो, मेरे बच्चे के प्राण लेकर अब दूर क्यों खड़े हो? मेरे छू लेने से ठाकुर जी को छूत लग गई। पारस को छूकर लोहा सोना हो जाता है, पारस लोहा नही हो जाता।"[5] यह कहते हुए वह अपने प्राण त्याग देती है। प्रेमचंद ने दलित स्त्री के शारीरिक व मानसिक पीड़ा को अपनी कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। वह अनेक प्रकार के अन्याय व अंहिसा को सहन करते हुए भी वह अपने हर प्रकार के कर्तव्य का पालन निष्ठा से करती है।

निष्कर्ष

मुंशी प्रेमचंद की कहानियों ये दलित समाज की दयनीय स्थिति का यथार्थ अंकन किया गया है। उनकी कहानियों के सभी पात्र वास्तविक जीवन से मेल खाते हैं। यह कहानियाँ पढ़ने के बाद सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है, कि पिडड़ी जाति व स्त्री को अछूत मानकर जो अत्याचार किया गया, वह कितना दर्दनायक था। प्रेमचन्द जी दलितों के सच्चे समर्थक थे। अगर उनके मन में ये भावना ना होती तो, वे अपनी रचनाओं में दलितों की यथार्थ स्थिति का, इतना स्टीक व मार्मिक चित्रण न कर पाते।

सन्दर्भ सूची

1. सद्गति (कहानी) सर्च–राज्य संसाधन केन्द्र हरियाणा – 124001, प्रथम संस्करण 2002, पृ0 सं0 11
2. वही, पृ0 सं0 42
3. मानसरोवर भाग–5, सरस्वती प्रैंस बनारस, छइवां संस्करण 1947, पृ0 सं0 42
4. कफन (कहानी) डायमंड पॉकेट बुक्स, न्यू दिल्ली, 110020 प्रकाशित वर्ष 2011, पृ0 सं0 51
5. मानसरोवर भाग–5, सरस्वती प्रैंस बनारस, पहला संस्करण 1946, पृ0 सं0 8